



269

न्यायालय माननीय राजस्व मण्डल मध्य प्रदेश ग्वालियर

प्रकरण क्रमांक: 12016 रिब्यू रिज-3698-I/16

दिनांक 25-10-16 को  
श्री कुम. श. उमाशंकर  
विरुद्ध श्री जलील  
खात नं. 372  
25-10-16

372  
25-10-16

Filed by  
MP Bhadracharya  
25/10/16

1- गुड्डू उर्फ रेहान पुत्र श्री स्व.श्री परीद खा  
आय 27 वर्ष , निवासी - चंदला तहसील चंदला  
जिला उत्तरपुर, -- आवेदन

बनाम

1. अमित कुमार पुत्र श्री उमाशंकर पटेल
2. गुलाब नाथलिंगपुत्र उमाशंकर पटेल  
स्वपरस्त पिता उमाशंकर पुत्र गयादीन पटेल  
निवासी चंदला तहसील चंदला जिला उत्तरपुर  
-- अस्ती रसोडे नृगण
3. जलील खा पुत्र जुमन खा
4. शरीफ खा पुत्र जुमन खा
5. राजू
6. श्रीमती रुकसाना बेवा परीद खा  
स्वस्त निवासी गण - चंदला तहसील चंदला जिला  
उत्तरपुर -- तरतीवी पक्षकारण
7. साय प्रदेश शासक -- रसोडे नृट

पुनर्विलोचन आवेदन पत्र अन्तर्गत धारा 51 म प्र भू राजस्व अधिक्ता  
1959 विरुद्ध न्यायालय माननीय राजस्व मण्डल, म.प्र. ग्वालियर के  
प्रकरण क्रमांक 391/ TTT /2014 व उन्वान अमित कुमार बनाम  
जलील खा आदि आदेश दिनांक 25/7-2016 से सुविहित होकर ।

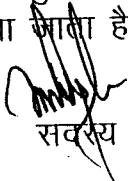
माननीय न्यायालय,

आवेदक को ओरसे पुनर्विलोचन निम्न तथ्यों आधारे

राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश-ग्वालियर

अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्रकरण क्रमांक रिव्यू 3698-एक/2016 जिला- छतरपुर

स्थान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
9-02-2017	<p>आवेदकगण की ओर से श्री एम.पी. भटनागर अभिभाषक उपस्थित। अनावेदकगण की ओर से श्री मुकेश भार्गव अभिभाषक उपस्थित। ग्राह्यता पर तर्क सुने गये। यह पुनर्विलोकन इस न्यायालय द्वारा पारित आदेश दिनांक 25.07.2016 के विरुद्ध प्रस्तुत किया गया है। इस न्यायालय के आदेश दिनांक 25.7.2016 का अवलोकन किया गया। म.प्र. भू राजस्व संहिता 1959 की धारा-51 सहपठित व्यवहार प्रक्रिया संहिता के आदेश 47 नियम 1 में पुनर्विलोकन हेतु निम्नलिखित आधारों का उल्लेख किया गया है -</p> <p>1- किसी नई और महत्वपूर्ण बात या साक्ष्य का पता चलना जो सम्यक तत्परता के पश्चात भी उस समय जब आदेश किया गया था उस पक्षकार के ज्ञान में नहीं था अथवा उसके द्वारा पेश नहीं की जा सकती थी या</p> <p>2-मामले के अभिलेख से ही प्रकट कोई भूल या गलती या</p> <p>3- कोई अन्य पर्याप्त कारण</p> <p>आवेदकगण की ओर से पुनर्विलोकन आवेदन पत्र में ऐसी कोई बात अथवा साक्ष्य नहीं दर्शाया गया है, जो आदेश पारित करते समय उसकी जानकारी में नहीं थी अथवा प्रस्तुत नहीं की जा सकती थी। अभिलेख से परिलक्षित कोई त्रुटि भी नहीं दर्शाई गई है केवल इस न्यायालय द्वारा निकाले गये निष्कर्षों में त्रुटि दर्शाने का प्रयास किया गया है जो पुनर्विलोकन का आधार नहीं है।</p> <p>उपरोक्त विश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में यह पुनर्विलोकन प्रथम दृष्टया आधारहीन होने से अग्रहण किया जाता है।</p>	<p style="text-align: center;"> सदस्य</p>

